VOL- IX | ISSUE- VIII | AUGUST | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

'तीसरी ताली' उपन्यास में अपने अस्तित्व के लिए जूझती किन्नर विनीता

सचिन संभाजी कारंडे,
पीएच्.डी. शोधछात्र,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,
महाराष्ट्र 406006
मो.नं.: 9604543445

शोधालेख का सार- Abtract

'तीसरी ताली' यह प्रदीप सौरभ का किन्नर जीवन पर केंद्रित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने किन्नरों को अपने समाज में अस्तित्व के लिए करने पडनेवाले संघर्ष का चित्रण किया है। अपने अधूरे देह के चलते उन्हें समाज में जीते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी हालत में उन्हें अपना अस्तित्व बनाए रखने में बहुत कसरत करनी पड़ती है। 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नरों को अपने अस्तित्व के लिए करने पड़नेवाले संघर्ष का चित्रण किन्नर विनीता के माध्यम से किया है।

की-वर्ड : *'तीसरी ताली' उपन्यास, किन्नरों का अस्तित्व, किन्नर जीवन का संघर्ष।*

प्रस्तावना :

'तीसरी ताली' यह प्रदीप सौरभ का किन्नर जीवन पर केंद्रित उपन्यास है। सन् 2011 में प्रकाशित इस उपन्यास में उपन्यासकार ने अपने समाज में अस्तित्व के लिए जूझते किन्नरों का चित्रण किया है। आज भी न परिवार किन्नरों का अस्तित्व मानने के लिए तैयार है न समाज। उनके अधूरे देह के चलते उन्हें सभी जगहों पर उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। जन्म से मृत्यु तक यह उपेक्षा उनका पीछा नहीं छोड़ती है। किन्नर बच्चे के जन्म से परिवार में खुशी के बजाय मातम छा जाता है। किन्नरों के जन्म से ही परिवार और समाज में उनके अस्तित्व का सवाल निर्माण होता है। न ठीक से स्त्री का न पुरुष का देह होने के कारण समाज में जीते समय उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी हालत में उन्हें अपना अस्तित्व बनाए रखने में बहुत कसरत करनी पड़ती है। समाज में जीते समय अपने अस्तित्व के लिए किन्नरों को करने पड़नेवाले संघर्ष को उपन्यासकार ने किन्नर विनीता और अन्य किन्नरों के माध्यम से बेहतरीन ढंग से किया है। यह चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में विविध घटना और प्रसंगों के माध्यम से प्रारंभ से अंत तक मिलता है।

आज समाज कितना भी शिक्षित क्यों न हो लेकिन किन्नरों के संदर्भ में उनके विचारों में ज्यादा परिवर्तन आया नहीं दिखाई देता। राजा-महाराजाओं के काल में सुरक्षा के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ किन्नरों पर सौंपी जाती थी लेकिन वर्तमान समय में उन्हें अपने अस्तित्व के लिए झगड़ना पड़ रहा है। समाज उनका अस्तित्व ही समाज मानने के लिए तैयार नहीं है। हर जगह पर उनकी उपेक्षा की जाती है। इस संदर्भ में मेघा मस्सी लिखती हैं- "भारत में राजसी शासकों के पतन के साथ किन्नरों का अस्तित्व भी जैसे भारतीय समाज में डगमगाने लगा। यही कारण है कि वर्तमान

समय में हमारे समाज में किन्नरों को अछूत से कम नहीं समझा जाता।"[1] समाज के इसी उपेक्षित रवैये के चलते तो प्रस्तुत उपन्यास में किन्नर मुखिया डिम्पल का डेरा शहर से दूर एक बेसराय गाँव में है। परिवार द्वारा त्यागने के बाद यही किन्नरों का डेरा उनका सहारा बन जाता है। वे अपने अधूरे देह के चलते समाज से हमेशा कटे-कटे ही रहते हैं लेकिन फिर भी जीविका के लिए समाज के साथ उनका संबंध तो आता ही है। किसी के घर में बच्चे के जन्म तथा शुभ अवसर पर मिलनेवाली नेग पर ही उनकी जीविका निर्भर होती है। डिम्पल के डेरे के किन्नरों की जीविका भी इसी पर निर्भर है। गौतम साहब के घर में बेटा पैदा होने की खबर डिम्पल के डेरे के किन्नरों के मिलने के बाद वे सिद्धार्थ एनक्लेव सोसाइटी में आते हैं। तब समाज के लोग उन्हें उपेक्षित नजरों से देखते हैं। खुद गौतम साहब किन्नर आने के बावजूद घर का दरवाजा नहीं खोलते। इसलिए उन्हें वहाँ से चूपचाप आगे जाना पड़ता है।

गौतम साहब द्वारा दरवाजा न खोलने का महत्त्वपूर्ण कारण था कि उनके घर में भी विनीत के रूप में किन्नर बेटा पैदा हुआ था। घर में इसप्रकार किन्नर बेटे के जन्म के चलते गौतम साहब भी चिंता में फँस जाते हैं। घर में किन्नर बच्चे के जन्म से उनके सामने भी परिवार की इज्जत का सवाल निर्माण होता है। वे जानते है कि यह भेद समाज में खुल गया तो उन्हें समाज में जीना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए वे बच्चे को हमेशा छुपाकर रखते हैं। वे शिक्षित तथा सेंट्रल सेक्रेटेरिएट में यूडीसी होने के बावजूद परिवार में किन्नर बच्चे का अस्तित्व मानने के लिए तैयार नहीं है। इस प्रकार परिवार की ओर से ही किन्नरों की किस प्रकार उपेक्षा की जाती है, इसका बेहतरीन चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया है।

गौतम साहब हमेशा किन्नर विनीत को समाज से छुपाकर रखते हैं। उनकी भी अकड़ कम हो जाती है। वे हमेशा अपने में ही खोए रहते हैं। लोकलज्जा के डर से वे अपना सिद्धार्थ एनक्लेव फ्लैट कम पैसों में बेचकर दूसरी जगह पर रहने के लिए जाते हैं। लोक निंदा के भय से वे खुद को ऐसे किन्नर बच्चे को पालने में असमर्थ मातने हैं। वे सोचते हैं-"एक-न-एक दिन बेटा हिजड़ों को सौंपना ही पड़ेगा। ये दुनिया ऐसे बच्चों को स्वीकार नहीं करती। मन्द बुद्धि और विकलांग बच्चों को समाज बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन हिजड़े को नहीं।"[2] गौतम साहब के इस कथन के माध्यम से समाज और परिवार का किन्नरों के संदर्भ में उपेक्षित रवैया स्पष्ट होता है। किन्नरों के संदर्भ में समाज में शिक्षित लोगों की यह स्थिति है तो अशिक्षित लोगों के संदर्भ में विचार करना ही दूर की बात है। इस प्रकार जन्म से ही विनीत के जीवन की दर्दनाक कहानी शुरू होती है। वह अलग-अलग मोड़ लेती हुई किन्नर जीवन की सच्चाई स्पष्ट करती है। प्रस्तुत उपन्यास में किन्नर विनीत उर्फ विनीता के साथ किन्नर निकिता, नीलम, रीना, राजा उर्फ रानी, सुनयना, ज्योति आदि किन्नरों के दर्दनाक जीवन कहानी को भी चित्रित किया है।

जैसे-जैसे विनीत बड़ा होने लगता है वैसे-वैसे उसके शरीर में किन्नर-सुलभ परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। शरीर में होनेवाले हार्मोन्स परिवर्तन के चलते विनीत लड़कियों की तरह हरकते करने लगता है। विनीत में होनेवाले स्त्री और पुरुष के दोनों गुण तथा अविकसित पुरुषांग आदि किन्नर-सुलभ लक्षणों के चलते पिता गौतम साहब की चिंता और बढ़ जाती है। विनीत लड़कों की तरह कपड़े पहनने के बजाय लड़कियों की तरह कपड़े पहनना पसंद करता है। वह बिंदी लगाकर घंटों खुद को आइने के सामने निहारता रहता है। विनीत के इस किन्नर-सुलभ बर्ताव के चलते ही परिवारवाले उसे अन्य बच्चों के साथ ज्यादा घुल-मिलने नहीं देते। इसी के चलते घर में अकेले-अकेले में उसका दम घूट जाता है। इसी के चलते इससे छुटकारा पाने के लिए उसे परिवार का त्याग करना पड़ता है लेकिन दुख की बात है कि परिवारवाले उसकी खोज-खबर तक लेना उचित नहीं मानते। उल्टा वे इसे झंझट से मुक्ति समझते हैं। इस संदर्भ में उपन्यासकार लिखते हैं- "उसकी खोज-खबर भी नहीं ली गई। उसकी गुमशुदगी

की रिपोर्ट भी पुलिस में दर्ज नहीं कराई गई। मोहल्लेवालों को यह कहकर शांत कर दिया गया कि वह अपनी बुआ के घर कानपुर गया है और अब वहीं पढ़ेगा।"[3] इस प्रकार परिवार में भी किन्नरों का अस्तित्व किस प्रकार खलता है इसका चित्रण विनीत के माध्यम से किया है। किन्नरों के संदर्भ में परिवार का यह रवैया हो तो समाज के संदर्भ में तो विचार करना ही दूर की बात है।

परिवार त्यागने के बाद वह खुद को आजाद महसूस करता है। क्योंकि अब उसे अपनी खुद की मर्जी के अनुसार जीने का अवसर मिल जाता है। वह एक अलग नई दुनिया में प्रवेश करता है लेकिन वह इस नई दुनिया से बिल्कुल अनजान है। वह शाम को घूमते-घूमते दिल्ली के केजी रोड पर आ जाता है। अब उसके रहन-सहन पर परिवारवालों का कोई बंधन नहीं था। अब वह अपने मन के मुताबिक खुलकर जीना चाहता है। इसलिए तो उसने स्त्री-सुलभ पहनावा किया था। इसी रोड कुछ किन्नर रोज शाम देह-व्यापार करते थे। विनीत ने स्त्रियों की तरह कपड़े पहनने के कारण एक अलीशान कारवाला व्यक्ति उसे वेश्या व्यवसाय करनेवाला हिजड़ा समझकर उसे अपनी कार में कहीं दूर ले जाकर उसके साथ शरीर-संबंध स्थापित करता है। इससे विनीत को पैसे भी मिल जाते हैं और उसे एक अलग खुशी का एहसास भी होता है। अब तक वह इन बातों से बिल्कुल अनजान था। जब वह आदमी उसे नाम पूछता है तब वह विनीत के बजाय विनीता बता देता है। इसके बाद विनीत हमेशा-हमेशा के लिए विनीता बन जाता है। यहीं से विनीत अर्थात् विनीता की जीवन कहानी अलग मोड़ लेती है। दूसरे दिन भी विनीता इस इलाके में आती है। इस दौरान उस इलाके किन्नर अपने इलाके में दूसरे किन्नरों को अवैध रूप में प्रवेश मानकर विनीता की जमकर पिटाई कर पुलिस के हवाले कर देते हैं। इसप्रकार किन्नरों के अपने-अपने इलाके होने के कारण वे भी अपने इलाके में दूसरे किन्नरों का अस्तित्व मान्य नहीं करते।

पुलिस थाने में भी विनीता को अलग अनुभव का सामना करना पड़ता है। पुलिस अधिकारी शर्मा उसे सैक्स रैकेट चलानेवाली रेखा चितकबारी से सौंपना चाहते हैं लेकिन कांस्टेबल राज चैधरी की दया भावना के चलते वह बच जाती है। चैधरी को कोई संतान न होने के कारण वे उसका अपनी बेटी की तरह पालन-पोषण करना चाहते हैं। इसलिए वे उसे अपने घर ले जाते हैं। लेकिन यहाँ पर भी विनीता के अस्तित्व का सवाल निर्माण हो जाता है। चैधरी की पत्नी विनीता किन्नर होने के कारण घर में रखने के लिए इन्कार कर देती है। वह इस प्रकार घर में किन्नर को रखना उचित नहीं समझती। इस प्रकार किन्नरों को हर जगह पर उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में किरण ग्रोवर लिखते हैं- "समाज में हिजड़ा समुदाय की स्थिति अत्यंत दयनीय है। इसका स्पष्ट कारण है कि समाज व सरकार द्वारा हिजड़ों के साथ उपेक्षित व्यवहार किया जाता है। समाज ने तो उन्हें मनुष्य का दर्जा भी नहीं दिया है।"[4] पत्नी के उपेक्षित रवैये के चलते कांस्टेबल चैधरी को विनीता को अपने घर में रखना मुश्किल हो जाता है। वे उसे अपने साथ घर में नहीं रख सकते लेकिन वे उसका साथ नहीं छोड़ते। इसी के चलते किन्नर विनीता को अपना अस्तित्व सिद्ध करने का मौका मिल जाता है। विनीता ने ब्यूटीशियन का कोर्स किया था। इसी के आधार पर वह आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। इस संदर्भ में वह कांस्टेबल चैधरी से कहती है-"बाबूजी, मैंने ब्यूटीशियन का कोर्स किया है। कई शादी-ब्याहों में भी दूल्हे-दुल्हन के मेकअप का अनुभव है मुझे। आप किसी ब्यूटी पार्लर में मुझे काम पर लगवा दें तो थोड़े दिन में मैं अलग कमरा लेकर रहने लगूँगी।"[5] इस प्रकार अपने कौशल पर विनीता आत्मनिर्भर बनना चाहती है। कांस्टेबल चैधरी की वजह से उसे अपना कौशल दिखाने का अवसर मिल जाता है; नही ंतो अन्य किन्नरों की तरह उसे भी जीविका के लिए देह-व्यापार ही करना पड़ता।

विनीता एक ब्यूटी पार्लर में प्रैक्टिस शुरू करती हैं। कुछ दिनों बाद वह खास समलैंगिक, गे लोगों के

लिए खुद का 'गे वर्ल्ड' नामक ब्यूटी पार्लर शुरू करती है। इसके माध्यम से वह ब्यूटीशियन के दुनिया की क्वीन बन जाती है। इस प्रकार विनीता खुद का अस्तित्व खुद निर्माण करती है। बड़े-बड़े फिल्मी कलाकार, उद्यमियों के बच्चे, फैशन डिजाइनर तक उनके ब्यूटी पार्लर में आने लगते हैं। उसका यह व्यवसाय इतलर बड़ जाता है कि उसे इसकी अन्य शाखाएँ खोलनी पड़ती है। इस प्रकार किन्नर होने के कारण परिवार से विस्थापित एक किन्नरी ब्यूटीशयन के दुनिया में अपना नाम कमाती है। उसे पैसा और सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं रहती। वह अपनी वजाइना सर्जरी कर पूर्ण स्त्री बन जाती है। उसमें अब सिर्फ एक ही कमी रह जाती है कि बच्चेदानी न होने के कारण वह बच्चा नहीं पैदा कर सकती। उसे बड़े-बड़े टी.वी. शो में उसे जज के रूप में बुलाया जाता है। वह टी.वी. पर हमेशा छायी रहती है। उसके पास अब इतना सबकुछ होने के बावजूद उसे परिवार के बिना सब अधूरा लगता है। परिवार से बिछुड़ने का दर्द उसे हमेशा सताता रहता है। साथ ही परिवार की ओर से दखलअंदाजी करने के कारण उसे उनकी चीढ़ आ जाती है। इसलिए तो वह अपने पिता की जीते-जी तेरहवीं करते हुए अपने पुत्र-कर्म से मुक्त हो जाती है। फिर भी परिवार की याद उसका पीछा नहीं छोड़ती।

अपनी बुद्धि तथा कौशल के बल पर ही विनीता आत्मनिर्भर बनने के बाद पिता गौतम साहब के रवैये में भी परिवर्तन आ जाता है। विनीत अर्थात विनीता को घर में बेटे की तरह रहने के लिए जिद करनेवाले पिता शालू, मेकअप का साहित्य तथा बिंदिया लेकर उसे मिलने के लिए आते हैं। इस प्रकार गौतम साहब के माध्यम से उपन्यासकार ने किन्नरों के संदर्भ में समाज के दोहरे बर्ताव पर व्यंग्य किया है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने किन्नर विनीता को अपने अस्तित्व के लिए करने पड़नेवाले संघर्ष को चित्रित किया है।

इसी प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में आनंदी आण्टी की बेटी किन्नर निकिता के भी अपने अस्तित्व के लिए करने पड़नेवाले संघर्ष को चित्रित किया है। किन्नर होने के बावजूद आनंदी आण्टी अपनी बेटी को अच्छी तरह से परवरिश करती है। उसे पढ़ाती भी है। जब निकिता के शरीर में किन्नर-सुलभ परिवर्तन आने लगते हैं तब उसे स्कूल में लेने के लिए इन्कार किया जाता है। इसलिए उसकी माँ उसे प्राइवेट में पढ़ाती है लेकिन निकिता के शरीर में आनेवाले किन्नर-सुलभ परिवर्तन के चलते उसे किन्नर समुदाय में शामिल करना पड़ता है। किन्नर डेरे में वासना-तृप्ति के आनेवाले लोग, किन्नरों के समलैंगिक संबंध तथा अन्य बातें निकिता को पसंद नहीं आती। इस माहौल में उसका मन नहीं लगता। इस हालत में उसे अपने अस्तित्व के बारे में चिंता सताने लगती है। निकिता को लगता है कि भविष्य में उसे भी अन्य किन्नरों की तरह काम करना पड़ेगा। उसकी इस मनोवस्था को चित्रित करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं- "निकिता ऐसी बातें सोचते-सोचते एक अजीब से अवसाद से भर चुकी थी। उसे यह बात सबसे ज्यादा डराती है कि थोड़े ही दिनों के बाद नीलम उसे चुनकी पहनाकर मुकम्मल हिजड़ा बना देगी...नीलम की भूमिका अचानक माँ से गुरु में तब्दील हो जाएगी। नीलम की गद्दी के अन्य हिजड़ों की तरह उसे भी नाचना-गाना पड़ेगा।"[6] इस प्रकार निकिता अपने अंधकारमय भविष्य को लेकर चिंतीत हो जाती है। आखिर वह चूहे मारने की दवा खाकर अपने अस्तित्व को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा देती है।इसप्रकार किन्नरों के अस्तित्व के सवाल को प्रस्तुत उपन्यास में जगह-जगह पर उठाया गया है।

निष्कर्ष :

अंततः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि किन्नरों को अपने अस्तित्व के लिए परिवार और समाज दोनों जगहों पर झगड़ना पड़ता है। 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नरों को अपने अस्तित्व के लिए करने पड़नेवाले संघर्ष का चित्रण जगह-जगह पर मिलता है। उपन्यासकार किन्नर विनीता के माध्यम से उसे बेहतरीन ढंग से चित्रित किया है। साथ ही कुछ मात्रा में किन्नर निकिता का भी चित्रण मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने किन्नर विनीता के माध्यम से यह बताने

का प्रयास किया है कि किन्नरों को उनकी बुद्धि और कौशल के बल पर आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इसके लिए समाज के सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जब तक वे जीविका के लिए समाज पर आश्रित होंगे तब तक लोग उसकी उपेक्षा करेंगे।

संदर्भ :

1. सं. मिलन बिश्नोई, किन्नर विमर्श: साहित्य और समाज, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018, पृ. 237
2. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृ. 81
3. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ. 83
4. सं. डॉ. शगुफ्ता नियाज, थर्ड जेण्डर तीसरी ताली का सच, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2018, पृ.75
5. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ. 96
6. वही, पृ. 44

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com